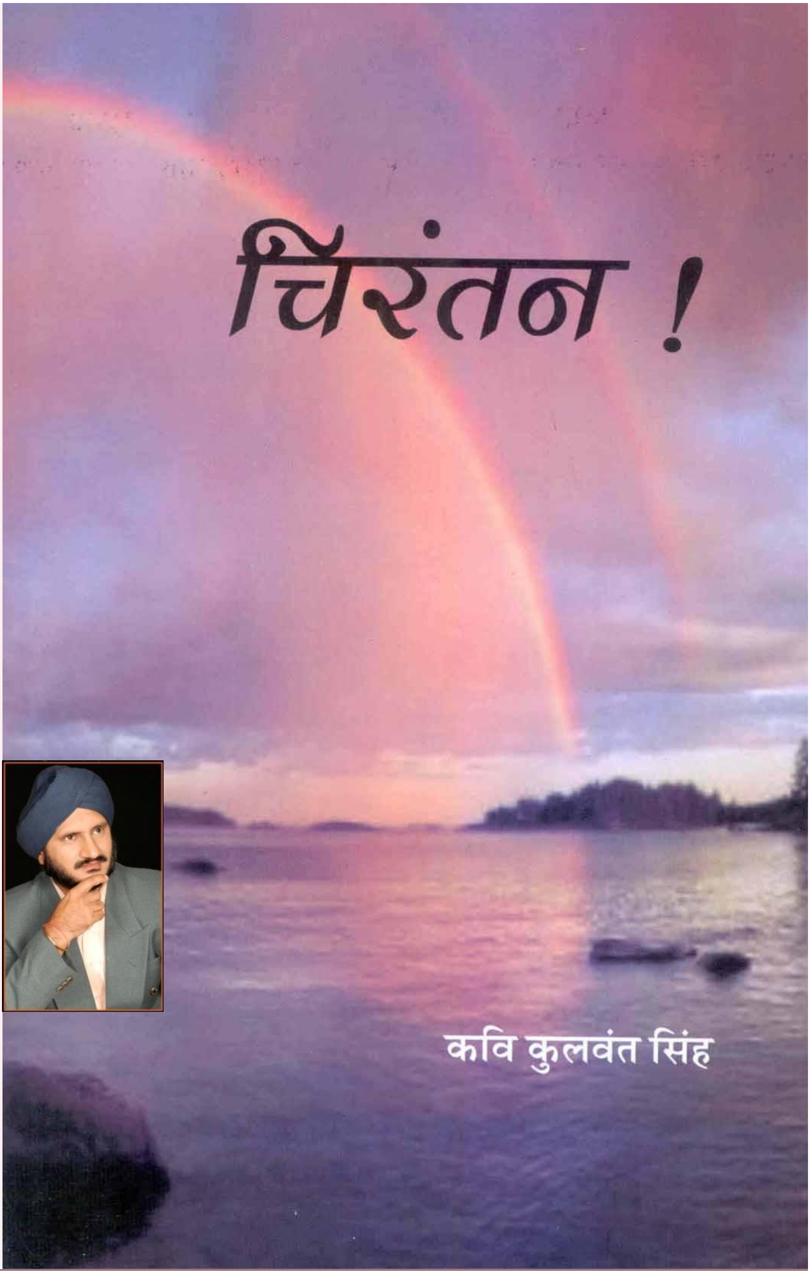

चिरंतन !
कवि कुलवंत सिंह

चिरंतन

(काव्य संग्रह)

कुलवंत सिंह



रचनाकार : कवि कुलवंत सिंह

संस्करण : 2010

मूल्य : RS 100/-

दान : इस पुस्तक के लिए अथवा सेवा भावना हेतु यदि आप धन अथवा श्रम दान देना चाहें तो कृपया निम्न संस्था को सीधे संपर्क करें। **'ग्वालियर चिल्ड्रेन हास्पिटल चैरिटी'** द्वारा **'स्नेहालय'** एवं **'ग्वालियर हेल्थ एण्ड एजुकेशन सोसाइटी'** तथा **'ग्वालियर हास्पिटल एण्ड एजुकेशन चैरिटेबल ट्रस्ट'** के सहयोग से चलाए जा रहे अभिनव महती सहायता कार्यों की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है।

प्रकाशक : रचना साहित्य प्रकाशन
413 जी वसंतवाडी,
कालबादेवी रोड, मुंबई 400002

आवरण : लीलू

मुद्रक : कलर मीडिया

CHIRANTAN By : KULWANT SINGH

कुलवंत सिंह का मूल भाव उदभोधन है

श्री कुलवंत सिंह की कविताएं पढ़कर यां सुनकर ऐसा नही लगेगा कि यह कोई वैज्ञानिक अधिकारी होंगे. क्योंकि विज्ञान के क्षेत्र में पदार्थ विज्ञान की सर्वोन्नत विधा से यह जुड़े हुए हैं. भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र से. जो संवेदनशीलता इनकी रचनाओं में मिलती है, प्रकृति के सौंदर्य को देखने की जो दृष्टि इनके गीतों में है, सबको सुखी देखने की लालसा इनके उद्दात मन में है और परपीड़ा और विकृत होती मानव संस्कृति के प्रति जो आक्रोश इनमें देखने को मिलता है, वह बहुत ही घनघोर, दृष्टाव्य और हृदयग्राह्य हैं. उदाहरण के लिए छुपा कहां भगवान रचना में कुलवंत सिंह भगवान को ललकारते हैं –

तार तार हुआ समाज,
मनुज बन गया हैवान,
अंधाधुंध सब भाग रहे,
मंजिल का नही ज्ञान,
गमों में सब जी रहे,
खुशी का न नामों निशान,
छुपा कहां भगवान.

प्रकति का वर्णन –

कन कन बरखा की बूंदे,
वसुधा आंचल भिगो रहीं,

बेटी जन्म के प्रति सामाजिक कुसंस्कार –

माँ को कोसा बेटी के लिए जाता,
तानों से जीना मुश्किल हो जाता,
गला घोटकर यां जिंदा दफना दिया जाता.

कुलवंत सिंह प्रतारणा ही नही उदभोधन के भी कवि हैं –

क्षुब्ध उदास मन हर्षित कर लो,
क्षीण हृदय स्पंदित कर लो,
आघात भूल सहज हो लो,
संगीत प्रकृति का बिखरा सुन लो.

और यह –

कुछ अशोक, चंद्रगुप्त, अकबर बन देश को जोड़ जाते हैं
कुछ औरंगज़ेब, मीरजाफ़र, जयचंद बन देशको तोड़ जाते हैं

और आज का युगीन विरोधाभास –

आज के युग में कितनी तरक्की है,
ट्रेनें. हवाई जहाज सड़क पक्की है,
राकेट मिसाईल कारें सितारा होटल हैं,

और

नजरें उठा कर देख लो किसी भी शहर गली में,

कचरे के डब्बों से खाना ढूंढता आदमी,

'हिंदी' कविता कुलवंत सिंह की नई कविता है. लेकिन भावना के स्तर पर वह गीत के समान प्रभावी है –

बाग की बहार है,
राग में मल्हार है,
हिंदी हमारा प्यार है,

इस प्रकार कवि कुलवंत सिंह जो भी लिखते हैं वह सोद्देश्य होता है. वह यह कि समाज को अपसंस्कृति के प्रभाव से. सामाजिक बुराइयों से मुक्त होने का आह्वान करते हैं. ऐसा नहीं कि वह विज्ञान की महत्ता को नही मानते. अपनी कविता एटम और भगवान में वह कण कण में बसता भगवान कहते हैं और यह भी कि जन जन में बसता भगवान. समझें तो बहुत गहरी बात कह गये कवि कुलवंत सिंह. भगवान की सर्वत्रता को बता दिया उन्होंने मगर कण से भी छोटे एटम का परिचय कराते हुए उन्होंने उसमें छिपी शक्ति का अहसास दिलाया है –

एटम खुद है छोटा इतना,
नाभिक का तो फिर क्या कहना,
लेकिन इसे विखंडित करके,
मिलती ऊर्जा चाहो जितना,

इन शब्दों से मनुष्य की सामर्थ्य को भी कवि, भगवान की सर्वत्रता के साथ स्थापित करता है. और यह सब तो अभी इस कवि की शुरुआत है. इन्ही गहराइयों के अतल वितल में डुबकी लगाने की उनकी यह प्रतिभा उन्हें बहुत आगे ले जायेगी.

जब कुलवंत सिंह ने मुझे अपनी कविताओं के लिए कुछ शब्द लिखने को कहा तो मैने चूंकि उन्हे सुना था इसलिए हां कह दी थी और साथ में कुछ कविताएं दे जाने के लिए कहा था. मैने उनकी पांडुलिपि पढ़ी उसके बाद जैसा समझा लिख दिया.

नंद किशोर नौटियाल

अध्यक्ष. महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी

संपादक. नूतन सवेरा

शुभाशंसा

कवि कुलवंत सिंह जिन परिस्थितियों में रहकर काव्य साधना करते हैं वह कविता के लिए नितांत प्रतिकूल हैं. इसके बावजूद ये अगर निरंतर आगे बढ़ रहे हैं और एक पर एक संग्रह हिंदी वांग्मय को दे रहे हैं तो यह इनके जीवट होने का हॊ प्रमाण है.

श्री सिंह का नया काव्य संग्रह **'चिरंतन'** आज के संदर्भों पर एक जीवंत काव्यात्मक टिप्पणी है. **'राम सेतु'** में इन्होंने बड़ी अच्छी बात कही है कि राम हमेशा वर्तमान हैं. वे कभी इतिहास नही हो सकते. इसी तरह 'कोख से' में घर की बेटियों का बहुत ही कारुणिक चित्रण किया है. इन्हे नख शिख का शृंगार भी आकृष्ट करता है. क्योंकि हर युग में जीवन का वह भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है. 'प्रकृति' में इन्होंने सदाबहार प्रकृति का बड़ा ही मनोरम दृष्य उपस्थित किया है.

श्री कुलवंत सिंह मुंबई जैसे मायानगर में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र जैसे महत्वपूर्ण कार्यालय में वैज्ञानिक अधिकारी हैं. इसके बाव्जूद साहित्य के प्रति

जन्मजात लगाव के कारण ही ये अपने प्रथम संग्रह **निकुंज** से निकलकर **चिरंतन** तक आ पहुंचे हैं.
मैं श्री कुलवंत जी को इस अवसर पर बधाई देता हूंऔर आशा करता हूं कि भविष्य में भी वह इसी प्रकार नये नये काव्य संग्रहों से सरस्वती का भंडार भरते रहेंगे.

मेरी अमित शुभकामनाएं.

डा बुद्धिनाथ मिश्र
मुख्य प्रबंधक राजभाषा
आयल एण्ड नेचुरल गैस कार्पोरेशन लि
देहरादून

परिचय : कवि कुलवंत सिंह

जन्म तिथि : 11 जनवरी

जन्म स्थान : रूड़की, उत्तरांचल

प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा : करनैलगंज गोंडा(उ.प्र.)

उच्च शिक्षा : अभियांत्रिकी, आई. आई.टी., रूड़की
(रजत पदक एवं 3 अन्य पदक)

पुस्तकें प्रकाशित : 1 - निकुंज (काव्य संग्रह)
2 - परमाणु एवं विकास (अनुवाद)
3 - विज्ञान प्रश्न मंच
4 – कण क्षेपण (प्रकाशनाधीन)
5 – चिरंतन
6 – हवा नूं गीत (काव्य संग्रह निकुंज का गुजराती अनुवाद)

रचनाएं प्रकाशित : साहित्यिक पत्रिकाओं, परमाणु ऊर्जा विभाग, राजभाषा विभाग, केंद्र सरकार की विभिन्न गृह पत्रिकाओं, वैज्ञानिक, विज्ञान, आविष्कार, अंतरजाल पत्रिकाओं में अनेक साहित्यिक एवं वैज्ञानिक रचनाएं

पुरस्कृत : काव्य, लेख, विज्ञान लेखों, विभागीय हिंदी सेवाओं के लिए एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरूस्कृत

सेवाएं : 'हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद' से 10 वर्षों से संबंधित
व्यवस्थापक 'वैज्ञानिक' त्रैमासिक पत्रिका
विज्ञान प्रश्न मंचों का परमाणु ऊर्जा विभाग एवं अन्य संस्थानों के लिए अखिल भारत स्तर पर आयोजन
क्विज मास्टर

संप्रति : वैज्ञानिक अधिकारी,पदार्थ संसाधन, प्रभाग, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई - 400085

निवास : 2 डी, बद्रीनाथ, अणुशक्तिनगर, मुंबई - 400094

फोन : 022-25595378 (O) / 9819173477 (R)

ईमेल : kavi.kulwant@gmail.com / singhkw@barc.gov.in

ब्लाग : www.kavikulwant.blogspot.com
www.PoetryPoem.com/kavikulwant

अनुक्रमणिका

वंदना (माँ शारदा की)

वर दे... वर दे. .. वर दे ।
शतदल अंक शोभित वर दे ।

मधुर मनोहर वीणा लहरी,
राग स्रोत की छटा है छहरी,
कण कण आभा अरुण सुनहरी,
तान हृदय में परिमित गहरी ।
उर में मेरे करुण भाव भर दे ।
वर दे ... वर दे .. वर दे।
शतदल अंक शोभित वर दे ।

तरू दल पर किसलय डोले,
पीहूं पीहूं पपीहा बोले,
मलय तरंगित ले हिंडोले,
आशीष शारदा मन पट खोले ।
काव्य किलोल कर मधुरिम कर दे ।
वर दे ... वर दे .. वर दे ।
शतदल अंक शोभित वर दे।

द्विज विस्मित कलरव विस्मृत,
सुरभि मंजरी दिगंत विस्तृत,
नाचे मयूर झूमे प्रकृति,
अंब वागेश्वरी संगीत निनादित ।
गीतों में मेरे रस छंद ताल भरदे ।
वर दे ... वर दे .. वर दे ।
शतदल अंक शोभित वर दे ।

प्रभात

जाग जाग है प्रात हुई,
सकुची, लिपटी, शरमाई ।

अष्ट अश्व रथ हो सवार
रक्तिम छटा प्राची निखार
अरुण उदय ले अनुपम आभा
किरण ज्योति दस दिशा बिखार ।

सृष्टि ले रही अंगड़ाई,
जाग जाग है प्रात हुई ।

कण - कण में जीवन स्पंदन
दिव्य रश्मियों से आलिंगन
सुखद अरुणिम ऊषा अनुराग
भर रही मधु, मंगल चेतन

मधुर रागिनी सजी हुई
जाग जाग है प्रात हुई ।

अंशु-प्रभा पा द्रुम दल दर्पित
धरती अंचल रंजित शोभित
भृंग - दल गुंजन कुसुम - वृंद
पादप, पर्ण, प्रसून, प्रफुल्लित ।

उनींदी आँखे अलसाई
जाग जाग है प्रात हुई ।

रमणीय भव्य सुंदर गान

प्रकृति ने छेड़ी मद्धिम तान
शीतल झरनों सा संगीत
बिखरते सुर अलौकिक भान ।

छोड़ो तंद्रा प्रात हुई
जाग जाग है प्रात हुई ।

ऊषा धूप से दूब पिरोती
ओस की बूंदों को संजोती
मद्धम बहती शीतल बयार
विहग चहकना मन भिगोती ।

देख धरा है जाग गई
जाग जाग है प्रात हुई ।

प्रकृति

सावन का महीना, प्रकृति की सुंदरता, बरसात..
इस मौसम में एक कविता प्रस्तुत है॥

सतरंगी परिधान पहनकर,
आच्छादित है मेघ गगन,
प्रकृति छटा बिखरी रुपहली,
चहक रहे द्विज हो मगन।

कन - कन बरखा की बूंदे,
वसुधा आँचल भिगो रहीं,
किरनें छन - छन कर आतीं,
धरा चुनर है सजो रहीं ।

सरसिज दल तलैया में,
झूम - झूम बल खा रहे,
किसलय कोंपल कुसुम कुंज के,
समीर सुगंधित कर रहे ।

हर लता हर डाली बहकी,
मलयानिल संग ताल मिलाये,
मधुरिम कोकिल की बोली,
सरगम सरिता सुर सजाए ।

कल - कल करती तरंगिणी,
उज्जवल तरल धार संवरते,
जल-कण बिंदु अंशु बिखरते,
माणिक, मोती, हीरक लगते।

मृग शावक कुलाँचे भरता,
गुंजन मधुप मंजरी भाता,
अनुपम सौंदर्य समेटे दृष्य,
लोचन बसता, हृदय लुभाता ।

प्रणय गीत

गीत प्रणय का अधर सजा दो ।
स्निग्ध मधुर प्यार छलका दो ।

शीतल अनिल अनल दहकाती,
सोम कौमुदी मन बहकाती,
रति यामिनी बीती जाती,
प्राण प्रणय आ सेज सजा दो ।
गीत प्रणय का अधर सजा दो।

गीत प्रणय का अधर सजा दो ।
स्निग्ध मधुर प्यार छलका दो ।

ताल नलिन छटा बिखराती,
कुंतल लट बिखरी जाती,
गुंजन मधुप विषाद बढाती,
प्रिय वनिता आभास दिला दो ।
गीत प्रणय का अधर सजा दो ।

गीत प्रणय का अधर सजादो ।
स्निग्ध मधुर प्यार छलका दो ।

नंदन कानन कुसुम मधुर गंध,
तारक संग शशि नभ मलंद,
अनुराग मृदुल शिथिल अंग,
रोम रोम मद पान करा दो ।
गीत प्रणय का अधर सजा दो ।

गीत प्रणय का अधर सजा दो ।
स्निग्ध मधुर प्यार छलका दो ।

कौन हो तुम ?

अधरों पे राग मलंद लिए,
मद-मधु-रस मकरंद पिए,
नयनों में संसृति हर्ष लिए,
सुंदर रचना कौन हो तुम ?

अलकों में तेरी सांझ ढ़ले,
पलकों से मृदुहास छले,
उर में मधुर प्रसून खिले,
शोभित रमणी कौन हो तुम ?

तन कौमुदी सिंगार किए,
पावों मे प्रमाद लिए,
मिलन का अभिप्राय लिए,
कांति कामिनी कौन हो तुम ?

वाणी कोकिल वास करे,
सुर में लय और छंद भरे,
खनक मधुर हृदय हरे,
चारू चंचला कौन हो तुम ?

यह कौन ?

यह कौन घर सजा गया! यह कौन घर सजा गया?

हर वस्तु को उसका
पता ठिकाना बता गया।
यह कौन घर सजा गया! यह कौन....

तम विचरित नीड़ में
किरण पुंज बिखरा गया।
यह कौन घर सजा गया! यह कौन....

जहाँ निराशा बसती थी
आशा के दीप जला गया।
यह कौन घर सजा गया! यह कौन....

जहाँ न खिलते थे प्रसून
अधर कुसुम खिला गया।
यह कौन घर सजा गया! यह कौन....

जहाँ न तिरते थे सुर
राग मल्हार गा गया।
यह कौन घर सजा गया! यह कौन....

उर तपता था जहाँ
शीतलता बिखरा गया।
यह कौन घर सजा गया! यह कौन....

सूनेपन का था प्रवास जहाँ
खुशियों को बिखरा गया।
यह कौन घर सजा गया! यह कौन....

प्रीत से था बैर जहाँ
हृदय हलचल मचा गया
यह कौन घर सजा गया! यह कौन....

झंकृत

झन - झन झंकृत हृदय आज है
वपु में बजते सभी साज हैं ।
पी आने का मिला भास है
मिटेगा चिर विछोह त्रास है ।

मंद - मंद मादक बयार है
खिल प्रकृति ने किया शृंगार है ।
आनन सरोज अति विलासहै
कानन कुसुम मधु उल्लास है ।

अंग - अंग आतप शुमार है
देह नही उर कि पुकार है ।
दंभ, मान, धन सब विकार है
प्रेम ही जीवन आधार है ।

रोम - रोम रस, रुधित राग है
मिला जो तेरा अनुराग है ।
मन सुरभित, तन नित निखार है
नभ - मुक्त, तल नव विस्तार है ।

घन - घन घोर घटा अपार है
संग तुम मेरा अभिसार है ।
अनंत चेतना का निधान है
मिलन हमारा प्रभु विधान है।

प्रेम

इस काव्य रचना में मात्रिक छंदों के साथ लय बद्धता का ध्यान तो रखा ही गया है साथ ही दो नये प्रयोग भी किए गये हैं ।
एक - पूरी काव्य रचना सिर्फ दो अक्षरीय शब्दों के साथ की गई है ।
दूसरा - किसी भी शब्द की पुनरावृत्ति नही है ।

नायक (नायिका से) :

हम तुम हर पल संग धरा पर,
सुख दुख तम गम धूप छांव उर ।
तन मन प्रण कर प्रीत गीत ऋतु
छल, काल, जाल, विष पान हेतु ।

कोटि भाव नित, होंठ नव गान,
झूम यार मद, लग अंग प्रान ।
तरु लता बंध, भेद चिर मिटा,
काम, रस, प्रेम, बाण कुछ चला ।

भय भूल झूल, राग रति निभा,
रीत मधु मास, रास वह दिखा ।
छवि कांति देह, मुख जरा उठा,
ताल शत धार, आग वन लगा ।

*** * * * ***

नेपथ्य से :

नीर रंग भर, सात सुर सजा,
झरें फूल नभ, वाद्य युग बजा ।
जप-तप-व्रत, दीप रोली हार,

जगा जग रैन, नत ईश द्वार ।

शील सेवा रत, हरि हाथ सर,
प्यार रब संग, देव देवें वर ।
शूल, शैल, शर, बनें फूल खर
ढ़ाल खुद खुदा, खुशी अंक भर।

तज राज यश, मिटा पाप ताप,
माया भ्रम क्षुधा, तोड़ डर शाप ।
ठान सत्य मूल, रोम रग धार
बल बुद्धि धूल, रूह नर सार ।

चूर दिन रात, भज राम नाम,
अश्रु आह मरु, शांति शिव धाम ।
बंधु, सखा सब, सुधि विधि छोड़,
लीन प्रभु ध्यान, लोभ निज मोड़ ।

दृग अंत: खोल, ज्ञान अति कोष,
आत्म निज नाद, सांई सच घोष ।
भुला प्रेम जन, सुत, मीत झूठ,
ओम एक सत, दिल बसा झूम।

दृढ़ निज बोल, पर सेवा सोम
मेघ घन घोर, विभा सप्त व्योम ।
लिप्त गुरू पाद, रत्न जब भाव,
मोख मिले भक्त, पार मझ नाव ।

पुकारता मुझको बार बार

अधीर हृदय सुनता झंकार
बसी पायलों मे मधु पुकार;
नख शिखा कर यौवन शृंगार
पुकारता मुझको बार बार ।

चेतना का मधुरिम संकेत
हृदय बसा सुकोमल आनंद;
ले कल्पना की मुक्त उड़ान
रूपसी संग भ्रमण सानंद ।

उज्जवल झरनों सी मुस्कान
लहराती शीतल मधुर गान;
प्रेम अनुभूति लेकर हिलोर
छेड़ती अंतस अभिनव तान ।

निस्सीम नभ सी प्रीत अनंत
असीम व्योम तल मृदु उल्लास;
संचित निधि तन अतुल सौगात
लहराती अंचल वपु विलास ।

निखरता स्वर्ण सा दमक गात
पुलकित झोंका अल्हड़ बयार;
ओढ़ चुनर धानी लता भासा
प्रकृति संग करती नयन चार ।

छंद में बंध कमनीय पास
सुंदरता की विभूति अपार;

संबल बन यौवन अनुभूति
जीवन हर्षित सुखद गुंजार ।

खन - खन बिखरी हंसी अभिराम
जड़ में सहज चेतन का भान;
चंचल नयना चपल वाचाल
मूक निमंत्रण मौन रसपान ।

बिखराती मलय देह सुकांत
अलस उषा निरखती अविराम;
मंद मलंद मोहक गति पांव
प्रकृति चकित रुक करती विश्राम ।

सुशोभित अनुकृति सुघड़ निहार
कानन कुसुम विस्मृति मुस्कान;
वाणी सुमधुर सप्त सुर गान
कोकिल कण्ठ, लय वीणा तान ।

संयम तोड़ रहा वृहत बांध
उमड़ अनुराग तरंग अबाध;
पुकारता मुझको बार - बार
कुसुमित वैभव यौवन निर्बाध ।

रसिया

ओ मेरे प्रीतम मनबसिया
तेरी याद सताए रंगरसिया
निखरी है चेहरे पर रंगत
कहां छुपा है रंगरलिया .

मिलन वह अपना पहला पहला
पलकों का उठ उठ गिरना
बेकाबू धड़कन का होना
मुझको निहारें तोरी अखियां .

दिल से दिल के जाम मिले
खामोशी से लब सिले
दो तन मिल इक प्राण हुए
प्यार में तोरे सद के जिया .

दिल पर कैसे काबू करूँ
तन्हा खुद से बातें करूँ
मौसम फिर है बहका बहका
क्यूँ हो सताते आओ पिया .

फागुन के रंग बिखरे बिखरे
मदहोशी का बहता दरिया
लाज के मारे कुछ न बोलूँ
गले लगा ले ओ मन रसिया .

प्यार

प्यार के लिए उम्र की कोई बंदिश नही होती,
लेकिन प्यार हो जाए तो उम्र है आहिस्ता बढ़ती।

खुशियों की सौगात यदि जिंदगी में चाहिए,
(हर पल)खुशियों को बांटने वाला एक हमसफर चाहिए।

प्यार पा लिया एक बार, उसे पत्थर का बुत न बनाइये,
गूंधिये रोज आटे की तरह और नई रोटी बनाइये।

दिल को उपहार समझ पाने की तमन्ना न रखो,
दिल तो दिल है उसे प्यार करो और जीत लो।

दुनिया के लिए तुम केवल एक इंसान हो,
लेकिन प्यार में किसी के लिए तुम पूरी कायनात हो।

प्यार कीजिए तो कीजिए पागलपन की हद तक,
मिटा दे हस्ती खुद की, फना हो जाए रूह तक।

दुनिया मे सबसे बड़ा गम यह नही कि इंसान मरते हैं,
गम है तो यही कि इंसान प्यार करना छोड़ देते हैं।

प्यार वो चाबी है जिससे खुशियों के सारे ताले खुलते,
दुनिया से दुख दर्द मिट जाते, गर इंसां से इंसां प्यार करते।

रिश्ते

अपने हो जाते बेगाने, बेगाने अपने हो जाते हैं।
यह दुनिया है, यहाँ रिश्तों के मायने बदल जाते हैं।।

दोस्त बन जाते हैं दुश्मन, दुश्मन दोस्त हो जाते हैं।
निज स्वार्थ हेतु यहाँ, समीकरण बदल जाते हैं।।

ताउम्र समझते रहे, हमराह जिन्हे हम अपना।
वो ही आज राह में हमें, ठोकरें दिये जाते हैं।।

पैसा हो गया है भगवन, त्याग दिया धरम और करम।
हो गये हैं सब सन्यासी, उस भगवन को पूजे जाते हैं।।

सच और झूठ का अंतर, मिटा दिया है हमने।
अब सच कहो यां झूठ, मायने वही रह जाते हैं।।

वेदना

अश्रुधार में हिमखंड को
आज पिघल जाने दो।
अंतर्मन में दबी वेदना को
आज तरल हो जाने दो ।

सजल नयन कोरों से
अश्रु गाल ढुलकने दो ।
करुण क्रंदन से विषाद को
आज द्रवित हो जाने दो।

विकल प्राण दुख से विह्वल
निरत व्यथा मिट जाने दो ।
मथ डालो इस तृष्णा को
पूर्ण गरल बह जाने दो ।

सूनी आहों मे सुस्मित
अभिलाषा को करवट लेने दो ।
निस्तब्ध व्यथित पतझड में
ऋतु बसंत छा जाने दो ।

नीरव निशा गहन तम में
स्वर्ण किरण खिल जाने दो ।
अंधकार मय जीवन पथ पर
ज्योति पुंज बिखर जाने दो ।

ह्रदय मरुस्थल जीवन को
आज हरित हो जाने दो।

पादप बंजर पर उगने को
आज हल चल जाने दो ।

कुसुम कुंज खिल चुका बहुत
मधुकर को अब गाने दो ।
स्वतः भार झुक चुका बहुत
मकरंद मधु बन जाने दो।

विरह तप्त इस गात पर
मेघ बिंदु बरसाने दो ।
उद्वेलित ह्रदय उच्छवासों को
सुधा मधुमय हो जाने दो ।

प्रेम सिंधु लेता हिलोरें
लहरों को उन्मुक्त उछलने दो ।
मादकता बिखर रही अनंत
प्रणय मिलन हो जाने दो ।

यौवन सरिता का रत्नाकर से
निसर्ग मिलन हो जाने दो ।
रति और मनसिज सा
पावन परिणय हो जाने दो ।

करुणा, विनय, माधुर्य का
निर्जर संगम हो जाने दो ।
जीवन सौंदर्य अंबर तक
बन उपवन महकाने दो ।

मन सुरभित कर लो

स्वर्ण उषा की लाली देखो
नव प्रभात मन सुरभित कर लो,
आशा से रंग जीवन भर लो
आभा से उर पुलकित कर लो।

क्षुब्ध उदास मन हर्षित कर लो
क्षीण हृदय स्पंदित कर लो,
भूल आघात सहज हो लो
गीत प्रकृति का बिखरा सुन लो ।

बीत गया जो दुख का सागर
तिमिर हटा आलोक उजागर,
अंत हुआ वह स्वप्न निशाचर
मानव से हैवान रूपांतर ।

स्वर्ण उषा की लाली देखो
नव प्रभात मन सुरभित कर लो।

तप्त हृदय का त्याग दहकना
करूण कण्ठ का त्याग बिलखना,
क्षत - अंतस का छोड़ सुबकना
सजल नयन की रोको यमुना ।

शुचि चंदन सा जीवन कर लो
देव - भभूति ललाट लगा लो,
उर को प्रतिमा ईश बना लो
वाणी में मधुरता बसा लो।

कुसुमित कर जग मधु बिखरा दो
कण पराग बन सृष्टि सजा दो,
स्वर कोमल बन सुर लहरा दो
भर चेतन मन ज्वार उठा दो ।

स्वर्ण उषा की लाली देखो
नव प्रभात मन सुरभित कर लो ।

भुला विराग अनुराग जगा दो
मानवता का बाग खिला दो,
प्रेम सरिता निर्मल बहा दो
असुर मुण्डन काली चढ़ा दो ।

नीरवता में हलचल भर दो
मिटा बेबसी खुशियां भर दो,
हर अधर अमर उल्लास भर दो
क्षमा धर्म गुण मानस भर दो ।

हर क्षण हर पल गुंजित कर दो
तन मन हर जन हर्षित कर दो,
जल, नभ, भू, नर झंकृत कर दो
जप, तप, बल, प्रण अर्पित कर दो ।

स्वर्ण उषा की लाली देखो
नव प्रभात मन सुरभित कर लो ।

आओ दीप जलाएँ

आओ खुशी बिखराएँ छाया जहाँगम है ।
आओ दीप जलाएँ गहराया जहाँ तम है ॥
एक किरण भी ज्योति की
आशा जगाती मन में;
एक हाथ भी कांधे पर
पुलक जगाती तन में;
आओ तान छेड़ें, खोया जहाँ सरगम है।
आओ दीप जलाएँ गहराया जहाँ तम है ॥
एक मुस्कान भी निश्छल
जीवन को देती संबल;
प्रभु पाने की चाहत
निर्बल में भर देती बल;
आओ हँसी बसाएँ, हुई आँखे जहाँ नम हैं।
आओ दीप जलाएँ गहराया जहाँ तम है ॥
स्नेह मिले जो अपनो का
जीवन बन जाता गीत;
प्यार से मीठी बोली
दुश्मन को बना दे मीत;
निर्भय करें जीवन जहाँमनु गया सहम है।
आओ दीप जलाएँ गहराया जहाँ तम है ॥

कवि अपना कर्तव्य निभा तूँ ।

छा रहे निराशा के बादल,
अंधियारा बढ़ रहा प्रतिपल ।
घुट-घुट कर जी रहा आदमी
आदमी नचा रहा आदमी ।

आशा के कुछ गीत सजा तूँ,
कवि अपना कर्तव्य निभा तूँ ।

मानवता लहू लुहान पड़ी,
बुद्धि चेतना से बनी बड़ी।
रक्त पिपाशा है पशु समान,
हेय मनुज अन्य, निज अभिमान ।

सुन धरती का यह रोना तूँ,
कवि अपना कर्तव्य निभा तूँ ।

कर्म क्रूर, पाखण्ड, धूर्तता,
विध्वंस, वासना, दानवता ।
लुप्त मानव का जन से प्यार,
निज स्वार्थ वश करता संहार ।

जागरण के अब गीत गा तूँ,
कवि अपना कर्तव्य निभातूँ ।

भोग में है खोया इंसान,
भूल गया है स्नेह, बलिदान ।

उन्माद, शोषण, कुमति विचार,
बना यही मानव व्यवहार ।

पथ मानव को उचित बतातूँ,
कवि अपना कर्तव्य निभा तूँ ।

है जेबें भर रहे कुशासक,
जनता पिस रही क्यों नाहक ।
सुविधाओं की खस्ता हालत,
पग-पग, पल-पल जीवन आहत।

उनींदी आँखे खोल अब तूँ,
कवि अपना कर्तव्य निभा तूँ ।

अर्थ सभी कृत्यों का तल है
ज्ञान, तेज, तप सब निर्बल है ।
विस्मित सभ्यता, मौन आघात,
कैसे मिटे यह काली रात ?

ज्योति पुंज कोई बिखरा तूँ,
कवि अपना कर्तव्य निभा तूँ ।

वाणी - अमृत, अंतर - विष है,
जीवन बना छल साजिश है।
धमनी रक्त श्वेत हुआ है
प्रस्तर मानव हृदय हुआ है ।

प्राणों में नव रुधिर बहा तूँ,
कवि अपना कर्तव्य निभा तूँ ।

पाप

कितने पाप धरा ने देखे,
आदिकाल से गिनकर लेखे।
सदियों से मानव को मानव,
शोषित बना रहा बन दानव ।

वसुधा ने सबको अपनाया,
सबके लिए इतना उपजाया ।
धनिकों ने जग को भरमाया,
दीनों को भूखा मरवाया ।

कहीं मनुज ने भंडार भरे,
और कहीं खाने को तरसे ।
मिलकर खाएं कमी न आए,
फिर भी लाखों भूखे सोएं ।

बना स्वार्थी मनुज है इतना,
धरती को भी बांटा कितना ।
कहीं कंगालों ने कर भरे,
तो भूपों ने भंडार भरे।

प्रजा हमेशा बेहाल रही,
महलों में सदा बहार रही ।
भूपों की अमिट भू हवश ने,
झोंका सदा प्रजा को रण में ।

नृशंस संहार धर्म जैसा,
कौन हुआ है राजा ऐसा ?

समूल नष्ट कर बंधु बांधव,
सिंहासन को किया न ताण्डव!

ठूंस भरी रनिवास रुपसियां,
झरोखा दर्शन करते मियां ।
इंसान बना हैवान कहीं,
बन बैठा नरभक्षी कहीं ।

अबला पर यह बल दिखलाता,
सम्मुख बलशाली भय खाता ।
पुत्र लालसा बेटी को मौत,
जन्म लिया खुद माँ की कोख।

पैसा बना पापों का मूल,
रिश्ते नाते गया सब भूल ।
कानून न्याय को मिली है छूट,
दीनों को जी भर कर लूट ।

शासक सत्ता को जेब धरें,
जनता कातर हो विकल मरे ।
क्या अंत कहीं अन्यायों का ?
धरा से अनगिनत पापों का!

जीवन गान गाओ !

जीवन जल रहा है, क्यों सिसकी भर रहा है,
आग उगल रहा है, दावानल बन रहा है ।

मेघा बरस जाओ ! तप्त उर को हर्षाओ,
जीवन गान गाओ, विश्व की तपन मिटाओ ।

गरल निकल रहा है, जगत में फैल रहा है,
विष पीने को विवश, इंसान भटक रहा है ।

मन मंथन कराओ, दिलों में सुधा बहाओ,
जीवन गान गाओ, मनुज को राह दिखाओ ।

तम में घिर गया है, आलोक कहीं छिपा है,
सूझता न किसी को, अंतहीन यह विभा है ।

दिलों में दीप जला, रोशनी से नहलाओ,
जीवन गान गाओ, पथ प्रकाश से सजाओ ।

गंध भूल गया है, इंसान बहक गया है,
पुष्प भूल गया है, सिर्फ धन महक रहा है ।

फूलों को खिलाओ, जग में गंध बिखराओ,
जीवन गान गाओ, मन में खुशबू बसाओ ।

दुख स्थाई बना है, सुख वंचित हो गया है,
दुखों के सागर में, लगा डुबकियां रहा है ।

न रह पाएंगे दुख, तुम जिंदगी को जीओ,

जीवन गान गाओ, खुशियां खूब बिखराओ।

शैतान हृदय छुपा, भगवान मूर्ति बना है,
मूर्ति कहाँ बोलती, दूसरों को डसना है ।

रब को दिल बसाओ, खुदी का सबब मिटाओ,
जीवन गान गाओ, खुदा को भी पा जाओ ।

क्रंदन (एक अधूरा गीत)

करुण क्रंदन से आह संपूर्ण विश्व हैरोता,
जग में भरी व्यथाओं की ज्वाला में है जलता,
तम की गहन गुफा में, निस्तब्ध गगन के नीचे,
घुट-घुट कर सिसक-सिसक कर जीवन क्योंहै रोता!

धूमिल होती आशाएं, परिचय बना रुदन है,
निष्ठुर निर्दयी नियति म्लान हुआजीवन है,
स्मृतियां बहतीं रहीं अश्रु बन अविरल जलधारा,
द्रवित होता हृदय नही, पाषाण बना नलिन है ।

हिम बन माहुर जमा रक्त, उर में नही तपन है,
प्रणय डोर जब टूट चली, रोता कहीं मदन है,
निश्वास छोड़ता सागर, नीरव व्याकुल लहरें,
दर्द से व्यथित वेदना, पीड़ा सहती जलन है ।?

काल बना निर्मोही, सजा रहा मुस्कान कुटिल,
अट्टहास करती तृष्णा, बन गया मानव जटिल,
प्रलय घटा घनघोर, अवसाद विक्षुब्ध खड़ा है,
उलझा मौन रहस्य, अभिशापित लहरें फेनिल ।

छुपा कहां भगवान ?

छुपा कहां भगवान तू है छुपा कहां भगवान ?
श्रद्धा शांति सत्य त्याग दंभ में खोया इंसान,
नहीं झांकता मन मंदिर भ्रम में भटक रहा इंसान,
तप पूजा जप का मान भूल गया है इंसान,
छुपा कहां भगवान तू है छुपा कहां भगवान ?

कहां गई वह हिंद संस्कृति जिसका था सम्मान,
कहां गई भारत सभ्यता जिसका था अभिमान,
कहां गाई लक्ष्मी देवी जिसका था बेटी नाम,
छुपा कहां भगवान तू है छुपा कहां भगवान ?

तज शील मर्यादा को धन का करता गुणगान,
करुणा न्याय दया दान का लोप हुआ है मान,
रिश्ते नाते परिजनों का बिलकुल रहा न ध्यान,
छुपा कहां भगवान तू है छुपा कहां भगवान ?

चमक दमक में खोया गर्व गरिमा से अनजान,
दीन का करता शोषण अनुचित का रहा न भान,
स्नेह कृपा पावन प्यार ऐसा था हिंदुस्तान,
छुपा कहां भगवान तू है छुपा कहां भगवान ?

तार-तार हुआ समाज़ मनुज बन गया हैवान,
अंधाधुंध सब भाग रहे मंजिल का नही ज्ञान,
गमों में सब जी रहे खुशी का न नामों निशान,
छुपा कहां भगवान तू है छुपा कहां भगवान ?

जमीं थी जब स्वर्ग यहां भूला जीवन का तान,

आत्म चिंतन बंद किया लोभ लिप्सा ही अरमान,
निशा का गहन साम्राज्य दिक्खता न कहीं ईमान,
छुपा कहां भगवान तू है छुपा कहां भगवान ?

धरा तुझे पुकार रही करो दमन बहुत शैतान,
दृष्टि दिशा दो जीवन को कण कण ईश समान,
अब न सताओ आ भी जाओ दीन का सुन गान,
छुपा कहां भगवान तू है छुपा कहां भगवान ?

छेड़ो तराने

छेड़ो तराने आज फिर झूमने का मन कर आया है।

सूने दिवस थे, सूने रैना,
सूने उर में गहन वेदना,
सूने पल थे, सूने नैना,
सूने गात में सुप्त चेतना।

अभिलाषाओं ने करवट ली,
करूणा से पलकें गीली।
छेड़ो तराने आज फिर झूमने का मन कर आया है।

सुप्त भाव थे, सुप्त विराग,
मरू जीवन में सुप्त अनुराग,
तमस विषाद, वंचित रस राग,
नीरव व्यथा, था कैसा अभाग।

दिग दिगंत आह्लाद निनाद,
दिव्य ज्योति हलचल प्रमाद।
छेड़ो तराने आज फिर झूमने का मन कर आया है।

मौन क्रंद था, मौन संताप,
मौन प्रमोद, राग आलाप,
मौन दग्ध दुख, मौन प्रलाप,
अंतस्तल में मौन ही व्याप।

आशा रंजित, मंगल संसृति,
हर्षित हृदय, झलक नवज्योति।
छेड़ो तराने आज फिर झूमने का मन कर आया है।

तिमिर टूटा निद्रा पर्यंत,
सकल वेदना का कर अंत,

पुलकित भाव घनघोर अनंत,
उन्मादित थिरकते पांव बसंत।

स्मृतियाँ विस्मृत, सजल नयन,
अभिनव परिवर्तन झंकृत जीवन।
छेड़ो तराने आज फिर झूमने का मन कर आया है।

पुकार

सहिष्णुता की वह धार बनो
पाषाण हृदय पिघला दे ।
पावन गंगा बन धार बहो
मन निर्मल उज्ज्वल कर दे ।

कर्मभूमि की वह आग बनो
चट्टानों को वाष्प बना दे ।
धरती सा तुम धैर्य धरो
शोणित दीनों को प्रश्रय दे ।

ऊर्जित अपार सूर्य सा दमको
जग में जगमग ज्योति जला दे।
पावक बन ज्वाला सा दहको
कर दमन दाह कंचन निखरा दे ।

अति तीक्ष्ण धार तलवार बनो
भूपों को भयकंपित रख दे ।
पीर फकीरों की दुआ बनों
हर दरिद्र का दर्द मिटा दे ।

शौर्य पौरुष सा दिखला दो
दमन दबी कराह मिटा दे ।
अंबर में खीचित तड़ित बनो
जला जुल्मी को राख कर दे ।

सिंहों सी गूंज दहाड़ बनो
अन्याय धरा पर होने न दे ।

बन रुधिर शिरा मृत्युंजय बहो
अन्याय धरा पर होने न दे ।

अपमान गरल प्रतिकार करो
आर्तनाद कहीं होने न दे ।
बन प्रलय स्वर हुंकार भरो
शासक को शासन सिखला दे ।

पद दलितों की आवाज बनो
मूकों का चिर मौन मिटा दे ।
कर असि धर विषधर नाश करो
सत्य न्याय सर्वत्र समा दे ।

सृष्टि सृजन का साध्य बनो
विहगों को आकाश दिला दे।
बन शीतल मलय बहार बहो
हर जीवन को सुरभित कर दे ।

वीरों का कर्तव्य

साहस संकल्प से साध सिद्धि
विजयी समर में शूर बुद्धि
दृढ़ निश्चय उन्माद प्रवृद्धि
ज्वाला सी कर चिंतन शुद्धि ।

कायरता की पहचान भीति है
अंगार शूरता की प्रवृत्तिहै,
शोषित जीवन एक विकृति है
नहीं मृत्यु की पुनरावृत्ति है ।

भर हुंकार प्रलय ला दो
गर्जन से अनल फैला दो,
शक्ति प्रबल भुजा भर लो
प्राणों को पावक कर लो ।

अनय विरुद्ध आवाज उठा दो
स्वर उन्माद घोष बना दो,
शीश भले निछावर कर दो
आँच आन पर आने न दो ।

जीवन में हो मरु तपन
सीने में धधकती अगन,
लक्ष्य हो असीम गगन
कंपित हो जग देख लगन ।

श्रृंगार सृष्टि करती वीरों का
पथ प्रकृति सँवारती वीरोंका,
आहुति अनल निश्चय वीरों का
शत्रु संहार धर्म वीरों का ।

चट्टानों सा मन दृढ़ कर लो
तन बलिष्ठ सुदृढ़ कर लो,
निर्भयता का वरण कर लो
उन्माद शूरता को कर लो ।

तपन सूर्य की वश कर लो
प्रचण्ड प्रदाह हृदय धर लो,
तूफानों को संग कर लो
शौर्य प्रबल अजेय धर लो ।

गगन भेदी रण शंख बजा दो
वज्र को तुम चूर बना दो,
विजय दुंदुभि स्वर लहरा दो
श्रेय ध्वजा व्योम फहरा दो ।

रोष, दंभ वीरों को वर्जित
करुणा, विनय वीरों को शोभित,
दीन, कातर हों कभी न शोषित
सत्य, न्याय से रहो सुशोभित ।

नीलकण्ठ तो मै नहीहूँ

नील कण्ठ तो मै नही हूँ
लेकिन विष तो कण्ठधरा है !
कवि होने की पीड़ा सह लूँ
क्यों दुख से बेचैन धरा है ?

त्याग, शीलता, तप सेवा का
कदाचित रहा न किंचित मान ।
धन, लोलुपता, स्वार्थ, अहं का,
फैला साम्राज्य बन अभिमान ।

मानव मूल्य आहत पद तल,
आदर्श अग्नि चिता पर सज्जित ।
है सत्य उपेक्षित सिसक रहा,
अन्याय, असत्य, शिखा सुसज्जित ।

ले क्षत विक्षत मानवता को
कांधों पर अपने धरा है ।
नील कण्ठ तो मैंनही हूँ
लेकिन विष तो कण्ठ धरा है ।

सौंदर्य नही उमड़ता उरमें,
विद्रूप स्वार्थ ही कर्म आधार ।
अतृप्त पिपासा धन अर्जन की,
डूबता रसातल निराधार ।

निचोड़ प्रकृति को पी रहा,
मानव मानव को लील रहा ।

है अंत कहीं इन कृत्यों का,
मानव! तूँ क्यों न संभल रहा ?

असहाय रुदन चीत्कारों को,
प्राणों में अपने धरा है ।
नीलकण्ठ तो मैं नही हूँ
लेकिन विष तो कण्ठ धरा है ।

तृष्णा के निस्सीम व्योम में,
बन पिशाचर भटकता मानव।
संताप, वेदना से ग्रसित,
हर पल दुख झेल रहा मानव ।

हर युग में हो सत्य पराजित,
शूली पर चढ़ें मसीहा क्यों ?
करतूतों से फिर हो लज्जित,
उसी मसीहा को पूजें क्यों ?

शिरोधार्य कर अटल सत्य को,
सीने में अंगार धरा है।
नीलकण्ठ तो मैं नही हूँ
लेकिन विष तो कण्ठ धरा है ।

इस गँवार को

हो भूख से बेजार बढ़ाकर जब कोई हाथ
उतारता स्वर्ण मुद्रिका जल रही चिता केहाथ
तो इस गँवार को भी यह बात समझ आती है ।

लेकिन रहने वाले ऊँचीअट्टालिकाओं में
सेकते हैं रोटियाँ जब जल रही चिताओं में
तो इस गँवार को भीयह बात गवारा नहीं है ।

भरसक मेहनत के बाद जब एक श्रमिक के हाथ
जुटा पाते न रोटी दो वक्त की एक साथ
चुराना एक रोटी का मुझे समझ आता है ।

माँ, पत्नी की लाश पर कर रहे हैं जो नग्न नृत्य
जमीन जायदाद खातिर कर रहे जो भर्त्सकृत्य
यह बात इस गँवार को नागवार गुजरती है ।

गाँवों में साधन नहीं, कमाई का ठौर नही
शहरों में भाग आते चार पैसे मिलें कहीं
बदहाल सा जीना उनका समझआता है ।

लेकिन शहरों से जा खेतों पर कब्जा करना
एक साथ सैकड़ों किसानोंकी जमीन छिनना
मुझे क्या किसी भी गँवार को समझ आता नहीं ।

कलेजे पर रख पत्थर भेज विदेश बच्चों को
स्वर्णिम भविष्य देने की चाहत लाडलों को
बुढ़ापे में खुद को ढोना समझ आता है ।

लेकिन उन लाडलों का क्या जो छीन कर सबकुछ

बेघर कर देते बूढ़े माँ बाप को समझ तुच्छ
गँवार को लगता खूब सयाने वोलाडले हैं ।

पिता का हाथ बँटाता बचपन खेत खलिहान में
माँ का हाथ बँटाताबचपन घरों के काम में
गँवार को क्या समझदार को भी समझ आता है ।

लेकिन बचपन खुद को कांधों पर धर जीता है
होटलों, दुकानों, सड़कों, फैक्ट्रियों में पलताहै
लगता गँवार को हुई बेमानी जिंदगी है ।

कायर बन जो जीते हैं, शांति शांति जपते हैं
कातर बोल रखते हैं, अपमान भी सहते हैं
दमन इन जातियों का एकदिन समझ आता है ।

किंतु ब्याघ्र बन जो छोटे राष्ट्र निगल जाते हैं
दूसरे देशों की भी बागडोर चलाते हैं
इस गँवार के पल्ले तो कुछ भी नही पड़ता है।

नेता बनने से पहले वह खाना खाते हैं
राजनीति में जमने पर बस पैसा खातेहैं
नेताओं का करोड़पति बनना समझ आता है ।

लेकिन आम जनता त्रस्त, अपमान सहती रहे
भूख, गरीबी, जुल्म, भ्रष्टाचार से भिड़ती रहे
देश को बेचें नेता, गँवार समझ पाता नहीं ।

अरे समझदारों ! इस गँवार को भी समझा दो
ऊट पटांग हरकतों को भेजे में घुसवा दो
गर नहीं तो इस गँवार को मूर्ख ही बतला दो ।

दुनिया के असली अजूबे

हाल फिलहाल एक हुआ तमाशा,
दुनिया वालों दो ध्यान जरा सा।
विश्व में नए अजूबे चुने गए,
एस एम एस से वोटिंग किए गए।

करोड़ों का हुआ वारा - न्यारा,
देकर वास्ता इज्जत का यारा।
भोली जनता को बनाया गया,
ताज के नाम पर फंसाया गया।

मीडिया भी बेफकूफ बन गई,
वह भी ताज के पीछे पड़ गई।
जनता से सबने गुहार लगाई,
जितने चाहो वोट दो भाई।

वोट के नाम पर खूब कमाया,
भीख मांगने का नया तरीका पाया।
अरे भाई! ताज कहाँ अजूबा है ?
वहाँ तो सोई बस एक महबूबा है।

आज के युग में कितनी तरक्की है,
ट्रेनें, हवाई-जहाज, सड़क पक्की है।
राकेट, मिसाईल, कारें, सितारा होटल हैं,
खुलती दिन रात जहाँ शैंपेन बोटल हैं।

आओ दिखाता हूँ मै आपको सच्ची अजूबे,
प्रगति के दौर के ये हैं असली अजूबे।

विश्व का प्रथम अजूबा - ध्यान दें !
मुंबई की लोकल ट्रेन में सफर कर दिखला दें
कोई माई का लाल साबित कर दे,
इससे बड़ा अजूबा दुनिया में दिखा दे।

आओ दिखाता हूँ मैं आपको सच्ची अजूबे,
प्रगति के दौर के ये हैं असलीअजूबे।

दूसरा अजूबा भी हमारे देश में,
नजरें उठा कर देख लो किसी भी शहरगली में।
कचरे के डब्बों से खाना ढूंढता आदमी,
उसी को खा कर अपनी भूख मिटाताआदमी।

आओ दिखाता हूँ मै आपको सच्ची अजूबे
प्रगति के दौर के ये हैं असलीअजूबे।

तीसरा अजूबा - कीड़ों सा रेंगता आदमी,
स्लम, फुटपाथ, ट्रैक पर जीवन बिताता आदमी।
सड़कों पर सुबह, लोटा लेकर बैठा आदमी,
देखिए अजूबा, मजबूर कितना आदमी।

और भी कितने अजूबे हैं हमारे देश में,
एक एक कर गिनाना है नमेरे बस में।
एक एक कर गिनाना है न मेरे बस में॥

विडंबना

क्या विडंबना है - हम इतनी तरक्की कर पाए,
भिखारी को मोबाइल तो दे सके किंतु रोटी न दे पाए ।

क्या विडंबना है - साठ साल से प्रौढ़ शिक्षा चला रहे हैं
बच्चों को अनपढ़ रख उन्हे बूढ़े होने पर पढा रहे हैं ।

क्या विडंबना है - शहरों में मेट्रो रेल तो ला सकेहैं,
लेकिन आम आदमी को अभी तक एक घर न दे सके हैं ।

क्या विडंबना है - खेती की पैदावार दस गुना बढ़ा चुके हैं
लेकिन किसानों की आत्महत्या को नही रोकसके हैं ।

क्या विडंबना है - लाखों डिग्री धारक बना दिए हैं
लेकिन उनको रोजगार के कोई साधन नही दिए हैं ।

क्या विडंबना है - कितने कोर्ट कचहरी खुलवाए
लेकिन एक मुकदमा निपटाने को चार जन्म लेने पड जाएं ।

क्या विडंबना है - कितने करोड़पति पैदा किए घर से
लेकिन आधी जनता दो वक्त की रोटी को तरसे।

क्या विडंबना है - सबसे अधिक कानून हमने बनाए
लेकिन भ्रष्टाचार देश का अभिन्न अंग है यही समझ पाए ।

क्या विडंबना है - बच्चे भगवान का रूप होते हैं,
लेकिन सबसे अधिक बाल मजदूर हमारे यहां ही होते हैं ।

क्या विडंबना है - मल्टीप्लेक्स, माल्स, गगनचुंबी इमारते हैं,
लेकिन यहां आधे लोग झुग्गी झोपड़ी में रहते हैं ।

क्या विडंबना है - देश को ये नेता चलाते हैं,
जो देश को कम देशवासियों को ज्यादा चलाते हैं ।

कोख से

परिचय - एक गर्भवती महिलाअल्ट्रासोनोग्राफी सेंटर में भ्रूण के लिंग का पता कराने के लिए जाती है। जब पेट परलेप लगाने के बाद अल्ट्रासाउंड का संवेदी संसूचक घुमाया जाता है तो सामने लगेमानिटर पर एक दृष्य उभरना शुरू होता है। इससे पहले कि मानिटर में दृष्य साफ साफउभरे, एक आवाज गूंजती है। और यही आवाज मेरी कविता है– 'कोख से'। आइये सुनते हैंयह आवाज -

माँ सुनी मैने एक कहानी !
सच्ची है याँ झूठी मनगढ़ंत कहानी?

बेटी का जन्म घर मे मायूसी लाता,
खुशियों का पल मातम बन जाता,
बधाई का एक न स्वर लहराता,
ढ़ोल मंजीरे पर न कोई सुर सजाता ! माँ....

न बंटते लड्डू, खील, मिठाई, बताशे,
न पकते मालपुए, खीर, पंराठे,
न चौखट पर होते कोईखेल तमाशे,
न ही अंगने में कोई ठुमक नाचते। माँ...

न दान गरीबों को मिलपाता,
न भूखों को कोई अन्न खिलाता,
न मंदिर कोई प्रसाद बांटता,
न ईश को कोई मन्नत चढ़ाता ! माँ.....

माँ को कोसा बेटी के लिए जाता,
तानों से जीना मुश्किल हो जाता,
बेटी की मौत का प्रयत्न भी होता,
गला घोंटकर यां जिंदादफ़ना दिया जाता ! माँ....

दुर्भाग्य से यदि फ़िर भी बच जाए
ताउम्र बस सेवा धर्म निभाए,
चूल्हा, चौंका, बर्तन ही संभाले जाए,
जीवन का कोई सुख भोग न पाए ! माँ.....

पिता से हर पल सहमी रहती,
भाईयों की जरूरत पूरी करती,
घर का हर कोना संवारती,
अपने लिए एक पल न पाती ! माँ....

भाई, बहन का अंतर उसे सालता,
हर वस्तु पर अधिकार भाई जमाता,
माँ, बाप का प्यार सिर्फ़ भाई पाता,
उसके हिस्से घर का पूरा काम ही आता ! माँ....

किताबें, कपड़े, भोजन, खिलौने,
सब भाई की चाहत के नमूने,
माँ भी खिलाती पुत्र को प्रथम निवाला,
उसके हिस्से आता केवल बचा निवाला ! माँ....

बेटी को मिलते केवल ब्याख्यान,
बलिदान करने की प्रेरणा, लाभ, गुणगान,
आहत होते हर पल उसके अरमान,
बेटी को दुत्कार, मिले बेटे को मान ! माँ....

शिक्षा का अधिकार पुत्र को हो,
बेटी तो केवल पराया धन हो,
इस बेटी पर फ़िर खर्चा क्यों हो?

पढ़ाने की दरकार भला क्यों हो ? माँ....

आज विज्ञान ने आसान किया है,
अल्ट्रा-सोनोग्राफ़ी यंत्र दिया है,
बेटी से छुट्कारा आसान किया है,
कोख में ही भ्रूण हत्या सरल किया है ! माँ...

माँ तू भी कभी बेटी होगी,
इन हालातों से गुजरी होगी,
आज इसीलिए आयी क्या टेस्ट कराने ?
मुझको इन हालातों से बचाने ! माँ....

माँ यदि सच है थोड़ी भी यह कहानी,
पूर्व, बने मेरा जीवन भी एक कहानी,
देती हूँ आवाज कोख से, करो खत्म कहानी,
करो समाप्त मुझे, न दो मुझे जिंदगानी।
करो समाप्त मुझे, न दो मुझे जिंदगानी।
करो समाप्त मुझे, न दो मुझे जिंदगानी।

पदचिन्ह

बचपन में मैने महाभारत पढ़ी थी
युधिष्ठिर का चरित्र भाया था ।
सोचा था -'मै भी
जीवन में सदैव सत्य बोलूंगा ।'
समझ नही आता -
आज लोग मुझे
'पागल' क्यों कहते हैं ?

बचपन में मैने गौतम बुद्ध को पढ़ा था
उनका साधूपन भाया था ।
सोचा था - 'मै भी
तन से न सही
मन से अवश्य साधू बनूंगा ।'
समझ नही आता -
आज लोग मुझे
'बेवकूफ' क्यों कहते हैं ?

बचपन में मैने गीता पढ़ी थी
कृष्ण का उपदेश भाया था ।
सोचा था –'मै भी
कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन
अपनाऊँगा ।'
बस कर्म करूंगा
फल की इच्छा नही रखूंगा ।
समझ नही आता -
आज लोग क्यों कहते हैं -

अरे ! इसका खूब फायदा उठा लो
बदले में कुछ नही मांगता !

बचपन में मैने पढ़ा था - दहेज कुप्रथा है ।
सोचा था - 'बिना दहेज शादी करूंगा
पत्नी को सम्मान दूंगा,
उसके माँ बाप को
अपने माँ बाप का दर्जा दूंगा ।'
समझ नही आता -
आज लोग मुझे क्यों कहते हैं -
धोबी का --------
न दामाद न बेटा !

बचपन में मैने गांधी को पढ़ा था।
सोचा था - ' मै भी अपनाऊँगा
सादा जीवन उच्च विचार'
समझ नही आता -
आज लोग मुझे
'गधा' क्यों कहते हैं ?

बचपन में मैने मदर टेरेसा को पढ़ा था।
सोचा था - 'बड़ा हो कर
मै भी करूँगा
लोगों की निस्वार्थ सेवा ।'
समझ नही आता -
आज लोग मुझे क्यों कहते हैं -
जरूर इसकी निस्वार्थ सेवा में भी
कुछ स्वार्थ होगा !

मुसाफ़िर

यह दुनिया एक रंगमंच है
मुसाफ़िर आते हैं,
अपना किरदार निभाते हैं
फ़िर चले जाते हैं ।

सब अपना अपना रंग दिखा जाते हैं
कुछ अच्छे, कुछ बुरे काम कर जाते हैं।
कुछ हीर-रांझा, लैला-मजनू
जैसा प्यार कर जाते हैं।

कुछ धर्मगुरू शंकराचार्य बन
अद्वैत और विश्वास दे जाते हैं ।
कुछ नानक, बुद्ध, ईसा, पैगंबर बन
मानवता को दिशा दे जाते हैं ।

कुछ राणा प्रताप, शिवाजी, गुरु गोविंद बन
दीनों को जुल्मियों से बचा जाते हैं ।
कुछ नादिर, गोरी, तैमूर बन
देश को लूट ले जाते हैं ।

कुछ आर्यभट्ट, भास्कर बन
खगोल बना जाते हैं ।
कुछ चरक, सुश्रुत बन
चिकित्सा को आयाम दे जाते हैं ।

कुछ अशोक, चंद्रगुप्त, आकबर बन

देश को जोड़ जाते हैं ।
कुछ औरंगजेब, मीर जाफ़र, जयचंद्र बन
देश को तोड़ जाते हैं ।

कुछ गांधी, विवेकानंद बन
ऐसे कर्म कर जाते हैं,
कि अपने पीछे, अपने
पदचिन्हों को छोड़ जाते हैं ।

कुछ भक्ति में लीन हो जाते हैं
मीरा बन कृष्ण को पा जाते हैं ।
कुछ समाज सुधारक बन
राम मोहन राय और कबीर बन जाते हैं ।

कुछ मदर टेरेसा बन
दूसरों की सेवा अपना लेते हैं ।
उनमें ही ईश्वर और खुशी ढूंढ
खुद को भूल जाते हैं ।

कुछ भगत, आजाद, बोस बन
देश पर निछावर हो जाते हैं ।
कुछ तेलगी, हर्षद, वीरप्प्न बन
देश को ही चूस जाते हैं ।

कुछ युवाओं के आइकान बन
किंग-खान, बिग- बी बन जाते हैं ।
कुछ पागलपन की हद तक गिर
अपनों की पीठ में छुरा घोंप जातेहैं ।

कुछ हैवान बन जाते हैं
कुछ शैतान बन जाते हैं
कुछ बेईमान बन जाते हैं
कुछ सम्मान पा जाते हैं ।

कुछ विज्ञान से यान बना जाते हैं
कुछ जीवन को रोशन कर जाते हैं ।
कुछ मानवता को तबाह करने
परमाणु बम गिरा जाते हैं ।

कोई खुन बहाता है
कोई खून चूसता है ।
कोई धर्म, देश, जाति पर
खून निछावर कर जाता है ।

यह दुनिया एक रंगमंच है
मुसाफ़िर आते हैं,
अपना किरदार निभाते हैं
फ़िर चले जाते हैं ।

राम सेतु

हनुमान नही पर राम भक्त हैं
राम हमारे रोमरोम हैं ।
सच (!) कहते हैं कुछ विद्वान (?)
राम नही इतिहास में हैं!

हां, राम इतिहास नही हो सकते !
वो तो सदा वर्तमान रहे हैं ।
भूत में भी विद्यमान रहे हैं
हर इंसां के दिल में रहे हैं ।

वर्तमान में भी उनका अस्तित्व
छाप अमिट आदर्श व्यक्तित्व ।
भविष्य में भी हर पल रहेंगे
हर जीवन के पूज्य रहेंगे ।

अयोध्या, लंका, पंचवटी,
मिथिला,किषकिंधा, जनकपुर,
शबरी, अत्रि, मार्कण्डेय आश्रम,
धनुषकोटि, चित्रकूट, रामेश्वर ।

पग - पग पर मिलते राम पग
फिर भी कहते राम नही हैं ।
देख उठा कर भारतभू की
मुट्ठी भर मिट्टी यहां की ।

कण - कण में तुम्हे राम मिलेंगे;
फिर भी दिखें न राम तुम्हें तो,

आकर सीना चीर के देखो -
हर दिल में तुम्हें राम दिखेंगे ।

राम - राम जप तर गये कितने
राम बसा मन पाया स्वर्ग ।
राम रमा है अखिल जगत में
मोक्ष बस राम नाम संसर्ग ।

राम - सेतु धरोहर अपनी
क्यों न करें हम पुनरुद्धार ।
नवजीवन दे राम सेतु को
कर लें अपना भी उद्धार ।

प्रभु

अनंत सूर्य, ग्रह, तारागण
निस्सीम व्योम में विद्यमान;
शिरोधार्य कर आज्ञा सत्ता
निरंतर विचरण सस्मान ।

तरु, तृण, खग, नर, मीन, भृंग, चर
वर्धित सदा ईश वरदान;
बिखरी जगत अतुल विभव राशि
नित स्तुति अटल सत्य महान ।

दिव्य प्रभा जग सतत सुशोभित
मानव हृदय गहन भर भाव;
राग, विराग, अनुराग विनोद
सृष्टि विभूति जुगादि प्रभाव ।

आदि अनादि एक ही प्रभुता
सुंदर रहस्य का गुंजार;
मोहक, मधुर, मनोहर, माणिक
आधीर हृदय सुनता पुकार ।

शाश्वत एक ब्रह्मांड में तू
चर अचर स्वीकारते मौन;
वरुण, मारुत, दिव, अर्क, मयंक
परम सत्ता से विलग कौन ?

एटम और भगवान

कण कण में बसता भगवान
जन जन में रहता भगवान,
माया तेरी बड़ी निराली
एटम में दिखता भगवान।

इलेक्ट्रान है छोटा कितना
सुई नोक का खरब है जितना,
एटम में जब छलांग लगाए
ऊर्जा का इक अंश निकलता।

स्फुरण, प्रस्फुरण यह दिखाते
स्पेक्ट्रम से पहचान बताते,
नगण्य कहो तुम इनको कितना
अनेक प्रभाव यह दिखलाते।

एटम खुद है छोटा इतना
नाभिक का तो फिर क्या कहना,
लेकिन इसे विखंडित करके
मिलती ऊर्जा चाहो जितना।

विकिरण के स्वरूप तो देखो
एल्फा, बीटा, गामा परखो,
यह भी ऊर्जा अपनी रखते
खूब संभाल कर इनको रखो।

हिंदी

अभिमान है,
स्वाभिमान है,
हिंदी हमारा मान है ।

जान है,
जहान है,
हिंदी हमारी शान है ।

सुर, ताल है,
लय, भाव है,
हिंदी हमारा गान है ।

दिलों का उद्गार है
भाषा का संसार है
हिंदी जन-जन का आधार है ।

बोलियों की झंकार है
भारत का शिंगार (शृंगार) है,
हिंदी संस्कृति का अवतार है ।

विचारों की खान है
प्रेम का परिधान है
हिंदी भाषाओं में महान है ।

बाग की बहार है
राग में मल्हार है
हिंदी हमारा प्यार है ।

देश की शान है
देवों का वरदान है
हिंदी से हिंदुस्तान है।

भारत

अरुण प्रभात किरणें प्रथम
चूमतीं हिंद भाल अप्रितम,
करतीं आदित्य रश्मियाँ
सृष्टि का अभिषेक प्रथम ।

हिम शैल श्रृंगों से
अवतरित हो अप्सरा सी,
झूमती मद नर्तन करतीं
आलोक फ़ैलातीं पफ़ुल्ल सी ।

नैसर्गिक सौंदर्य छटा निराली
गूंजते स्वर देवालयों से,
ईश स्तुति, अर्चन, आरती
हिंद के हर नगर से ।

शंखों का पावन नाद
स्पंदित घंटों का निनाद,
डोलते देवों के सिंहासन
भक्तों का अतिरेक उन्माद।

कान्य कुमारी की सुषमा
मन देख - देख हर्षाता,
तीन दिशा में विस्तृत जलनिधि
बंग, अरब, हिंद लहराता ।

अरुणोदय और अस्तांचल
चरणों में शीश नवाता,

तीन सागरों का संगम
मिल रज - चरण बाँटता ।

मंदाकिनी, कालिंदी, नर्मदा
शोभित करतीं हिंद धरा,
कावेरी, कृष्णा, महानदी
हरित सिंचित उपजाऊ धरा ।

छलका अमृत जहाँ वसुधा
विश्व ख्याति पावन महत्ता,
उज्जैन, नासिक, प्रयाग, हरिद्वार
महाकुंभ तीर्थ लगता ।

जनक विश्व सभ्यता का
हड़प्पा, मोहन-जोदाड़ो का,
शून्य की उत्पत्ति का
प्राचीनतम भाषा संस्कृत का।

वेदों, उपनिषद, पुराणों का
रामायण, महाभारत, गीता का,
भाष्कर, मिहिर, आर्यभट्ट का
सुश्रुत, जीवक, चरक का ।

पूर्ण विश्व को पाठ पढ़ाया
दर्शन, संस्कृति, अध्यात्म,
ज्ञान, भक्ति, कर्म त्रिवेणी
अच्युत बहती धारा परमार्थ ।

धर्मों, संस्कृतियों का अद्भुत संगम

पल्लवित अनेक मत संप्रदाय,
विभिन्न मत धाराएं मिलीं
बनी एक - प्राण पर्याय ।

विस्मित करती पुरा वास्तुकला
उन्न्त था इतना विज्ञान,
समृद्ध कला, कारीगरी
विश्व करता था सम्मान ।

विद्वानों, वीरों की पुन्य धरा
ज्ञानी, दृष्टा, ॠषि, महात्मा,
बद्री, द्वारका, पुरी, रामेश्वर
हर धाम बसा परमात्मा।

संघर्ष, सवार्थ, अहंकार, मद
परित्याग का दिया संदेश,
सत्य, अहिंसा, त्याग मर्म
विश्व ने पाया उपदेश ।

तेरी गोद जन्म एक वरदान
माँ स्वीकारो कोटि प्रणाम,
जननी जन्मभूमि स्वर्ग समान
अभिनंदन भूमि लोक कल्याण।

भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र

(भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र पर यहकविता केंद्र की गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डालती है। अप्सरा, साइरस, ध्रुव केंद्र में तीन अनुसंधान रिएक्टर हैं। नासिक (महाराष्ट्र) में किरणन संयत्र लगाया गया है।)

अरब सिंधु तट शोभित,
ज्ञान प्रसार नित मुखरित,
परमाणु अनंत ज्ञान पूरित,
सृजन संसृति निरत प्रहसित।

गिरि पयोधि मध्य सुशोभित,
प्रकृति छटा सघन रंजित,
निखार कन कन आच्छादित,
अभिराम दृष्य से उर पुलकित।

हिंद मुकुट ज्ञान परचम,
लुप्त अज्ञान, मिटे भ्रम,
ज्ञान तीर्थ आलोक उद्गम,
विश्व विख्यात स्थल श्रम।

शक्ति संचरित भारत सबल,
परमाणु शक्ति संपन्न प्रबल,
संपूर्ण देश गौरव सकल,
'भाभा', 'कलाम', 'विक्रम' कर्मस्थल।

केंद्र मे 'अप्सरा' अवतरित,
विज्ञानी प्रेम पाश से हर्षित,
गोल गुंबद 'साइरस' निर्मित,
परमाणु ऊर्जा प्रतीक सृजित।

'ध्रुव' से बनी निज पहचान,
भारत का गौरव अभिमान,
पोषित नाना अनुसंधान,
विश्व गाये स्तुति गान।

चिकित्सा क्षेत्र उपयोग महती,
विकिरण निदान उपचार करती,
प्रकृति के रहस्य समझाती,
मानव को नवजीवन देती।

नाना अन्न, फ़सलें विकसित,
खाद्यान्न, सब्ज, दाल, किरणित,
'कृषक' सुविधा नासिक निर्मित,
जीवन सौंदर्य विज्ञान सिंचित।

अहो भाग्य श्रम में जुटें,
प्रशस्ति पथ प्रति पल डटें,
जन जन विकास मार्ग जुटें,
आलोक प्रखर अज्ञान मिटे।

मुकुट भाल युग युग रहे,
वसुधा गौरव तरणि रहे,
सश्रम नित निनाद रहे,
अर्पित पूजा कर्म रहे।

स्वागत गीत

(भूतपूर्व राष्ट्रपति महामहिम डा. एपीजे अब्दुल कलाम के स्वागत में रचा गया गीत)

स्वागतम सुस्वागतम
महामहिम सुस्वागतम।
रामेश्वर की पवित्र भूमि पर
जन्म लिया इक महामना ने,
'थिरुकराल' के महान ज्ञाता
नई दिशा दी कवि मना ने।
स्वागतम सुस्वागतम
अभ्यागत सुस्वागतम, स्वागतम सुस्वागतम ।
विज्ञान को उन्न्त बनाया
भारत को गौरव दिलवाया,
'नाग', 'अग्नि', 'पृथ्वी', 'आकाश'
शक्ति संपन्न देश बनाया ।
स्वागतम सुस्वागतम
प्रतिभा धनी सुस्वागतम, स्वागतम सुस्वागतम ।
दूर गगन में हम उड़े
पंख खोल हम संग तेरे,
नित नई ऊचाईयां
भारत ने पाईं संग तेरे ।
स्वागतम सुस्वागतम
भारत रत्न सुस्वागतम, स्वागतम सुस्वागतम ।
भारत को सुपर बनाने का
स्वप्न सजाया जो आपने,
करेंगे पूरा हम उसको
नव रुधिर जगाया आपने ।
स्वागतम सुस्वागतम
महामहिम सुस्वागतम, स्वागतम सुस्वागतम ।

निकुंज : समीक्षा (1)

विज्ञान के कविता होने का अर्थ है कवि कुलवंत सिंह

कविता विज्ञान नही होती, लेकिन विज्ञान के साथ चले तो इसका व्यक्तित्व कुहरे में खिली धूप की तरह आकर्षक होता है - कवि कुलवंत सिंह की कविताओं को पढ़कर यही कहना ठीक होगा. 'निकुंज' ७७ कविताओं का संग्रह है, जो कविताएं कुलवंत सिंह के संवेदनशील मन और आलोचक मस्तिष्क की धाराओं से मिलकर बनी कविताएं हैं, जो समकालीन हिंदी कविताओं के लिए रसायन की तरह हितकारी हैं. हितकारी इस अर्थ में कि आज की कविताएं किस तरह व्यक्त होकर और क्या कहकर अपने अस्तित्व को बचाए रख सकती हैं, इसका संदेश यां मंत्र इन कविताओं में व्याप्त और बिखरा हुआ है. यह सही है कि आज हम जिस परिवेश में जी रहे हैं,

जिंदगी कदाचित जिसमें अपनी
अंतिम घुटी सांसे ले रही है
जहां
नि:शब्द / रात्रि की नीरवता/स्याह काले
अपने दामन में /लपेटे हुए है - एक टीस

(आंतिम सांसे पृ. ९३)

लेकिन कवि कुलवंत इसी में घुटकर नही रहते, एक सुलझे वैज्ञानिक की तरह रात्रि की नीरवता के कारण और

उससे मुक्ति के रहस्यों को खोलते भी हैं और तब इनकी कविताएं भी कालिखपुती भाषाओं में व्यक्त कुंठाओं और और बडबोलेपन की आधुनिक कविताओं का साथ छोड़कर साहित्य के मंगलमय रहस्य लोक से जुड़ जाती हैं. कुलवंत सिंह की कविताएं अंधकार के पेट में रोशनी का सतंभ हैं, जिसमें पूरी दुनिया के लिए ममता है, रोशनी है. इनकी कविताओं का यह वैष्णव व्यक्तित्व उनकी कविताओं में एकदम खुलकर भी सामने आ जाता है,

जीवन को न बांधिए / नियमों से / उसूलों से -
जीवन तो इत्र है / इसको दीजिए महकने

(निर्झर ८७)

डूबते सूर्य को देखा.... / डूबते डूबते भी / रश्मियां /
बिखराता जाता / महापुरुषों - सा / कुछ देकर जाता

(सूर्यास्त पृ ८९)

अगर आपत्ति न लगे तो कुलवंत सिंह के कविता संग्रह 'निकुंज' के लिए एक पंक्ति में कहना चाहूं तो कहूंगा कि आज के उबलते परिवेश के महाभारत के बीच दिशाहीन, मतिभ्रम निस्तेज अर्जुनों के समक्ष पढ़ी गई नई 'गीता' है, जिस गीता का मूल्यांकन, काव्यशास्त्र की शब्दशक्ति, रीति-गुण, ध्वनि, और रस की जमीन पर नहीं, उसमें व्यक्त वृहत्तर जीवन दृष्टि के आधार पर होता है, वैसे कवि कुलवंत सिंह का 'निकुंज' काव्य की ध्वनि को भी समझता है, रीति- गुण की शैली को भी, और शायद बेहतर ढ़ंग से - यही कारण है कि कथ्य के

बदलते ही कविता की शैली भी उसी रंग में बदल जाती है. कवि का यह 'निकुंज' किसी एक खास रसवादी का घर नही है, रसों का रास है इस काव्यशाला में - भावों के जितने छोटे बड़े रंग हो सकते हैं - 'निकुंज में सब साथ हैं. अगर ठीक से 'निकुंज' के स्वर को पकड़ने की कोशिश करें तो हमें हिंदी काव्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल के नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल तक की कविताओं के स्वर गूंजते मिलेंगे. लेकिन सारे स्वरों में एक स्वर सबसे अधिक मुखर है, और वह यह -

आओ खोजें इक नई दुनिया को
जिसमें तुम तुम न रहो, मैं मैं न रहूं बस हम रहें

(नई दुनिया पृ ५०)

हिंदी की समकालीन कविता में यह कुछ अलग सा स्वर है, जो आज की कविताओं में दुर्लभ हो गया है, और जो कवि कुलवंत सिम्ह में आकाशदीप की तरह उठता है.

समीक्षक : डा. अमरेंद्र
संपादक, 'वैखरी'

निकुंज : समीक्षा (2)

आत्मीय संवाद बनाती कविताएं

समय के इस भयावह दौर में जब बाजार तंत्र ने आदमी के संवेदना जगत को क्षत-विक्षत करते हुए उसे एक खंडहर में तब्दील कर दिया हो, जहां केवल खुदगर्जी का आलम चरम पर हो, जहां महज औपचारिक्ताएं ही शेष रह गई हों, जहां केवल निजी स्वार्थ हेतु युद्ध लड़े जा रहे हों, जहां शाश्वत मूल्यों की जमीन लगातार छोटी होती जा रही हो, जहां हत्याएं, बलात्कार की भीषण आंधियां चल रही हों ऐसे विद्रूप समय में एक मुक्त कवि श्री कुलवंत सिंह की कविताओं को पढ़ते हुए राहत मिलती है. वह उन तमाम अव्यवस्थाओं, खामियों के प्रति ही नही बल्कि इंसान और इंसानियत को खत्म कर देने वाली प्रवृत्तियों के खिलाफ, कृति और प्रकृति की दुश्मन बनती जा रही उन तमाम कारकों के खिलाफ उठ खड़ा होता दिखाई देता है और यह शुभ संकेत भी है. वह कम से कम शब्दों का प्रयोग करते हुए एक ऐसा रचना संसार खड़ा करता है, जहं भटकों को, दु:खी प्राणियों को राहत मिलती दिखाई देती है .

वह अच्छी तरह जानता है कि परिवर्तन एक सास्वत प्रक्रिया है, एक शाश्वत सत्य है जो किसी भी कीमत पर किसी के द्वारा रोका नही जा सकता. इस परिवर्तन शीलता के दौर में

जाहिर है कि आदमी भी बदलेगा. कवि इस बदलाव को लेकर चिंतित है. उसकी चिंताओं में कुछ प्रश्न सहज रुप से आ खड़े होते हैं. वह प्रश्न करता है कि क्या चांद सूरज धरती भी बदल रहे हैं? जब वे नही बदल पा रहे हैं तो तुम इस प्रवाह की लपेट में आने से क्या अपने आप को बचा नहीं पा रहे हो. प्रकृति का जरा सा भी बदलाव हमारे लिए जीने मरने का प्रश्न बन जाता है. अत: बदलाव किस काम क जो औरों का जीवन खतरे में दाल दे. फिर हमारे अपने क्या आदर्श होने चाहिएं, आदि पर एक कवि मैन रहने के बजाए मुखर होकर अपनी बात हमारे समक्ष रखता है.

संग्रह में एक नही कई ऐसी कविताएं हैं जो हमारे जीवन के साथ सूक्ष्मता से जुड़ी हैं, एवं उनके प्रति यां तो हम घोर लापरवाह हो गये हैं, यां उन्हें द्गीरे धीरे त्यागते चले जा रहे हैं, कवि ने बड़ी बेबाकी से इन पर अपनी कलम चलाई है.

कवि का एक उजला पक्ष और है जिस पर सायद ही किसी की नजर पड़े और वह है संग्रह का वह समर्पित भाव जिसमें अपने माता-पिता तथा आचार्यों को देवरूप मान कर स्तुति की है. और इन्हें ही अपना आराध्य मान कर काव्याम्जलि अर्पित की है. निश्चय ही यह विनीत भाव उन्हें रजकण से विराटता प्रदान करता है, इसके लिए जितनी भी तारीफ की जाए संभवतह : वह कम ही पड़ेगी.

आई आई टी रुड़की से इंजीनियरिंग में बी. ई. करने तथा एक वैज्ञानिक अधिकारी होने के बावजूद श्री कुलवंत सिंह का

रुझान कविताओं में है, साहित्य में है, तो यह हम लोगों का परम सौभाग्य है कि ऐसे ऊर्जावान कवि को हमारे बीच में पाकर हम गदगद हुए बिना नही रह सकते.

कविता मानसिक विलासिता की चीज नही है. वह सामाजिक अपरिवर्तन के औजार का काम करती है.नि:सम्देह उनकी कविताओं का पुरजोर असर पाठकों पर पड़ता है. एक बात औएअ कह देने में मैं अपने आप को रोक नही पा रहा हूँ, और वह यह कि कविता दरअसल उसकी भाषा के सौंदर्य में होती है, कथ्य की संवेदनाओं में होती है, इसलिए कविताओं पर की गई टिप्पणी, उसकी समीक्षा यां आलोचना अपर्याप्त है. कविता अपनी संपूर्ण उपस्थिति में ही आस्वाद से अपना वाजिब और आत्मीय संवाद बना सकती है. आपकी कविताओं में मुझे काफी कुछ मिला है जिसका वर्णन महज़ अल्फाज़ों में संभव नही. एक अच्छे संग्रह के लिए मेरी बधाईयां शुभकामनाएं स्वीकारें. भविष्य में और भी नायाब चीजें पढ़ने को मिलेंगी.

इन्ही आशाओं और विश्वास के साथ

गोवर्धन यादव

अध्यक्ष, म. प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

जिला इकाई, छिंदवाड़ा, म. प्र.